International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 19-09-2019; Accepted: 20-10-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 6; November 2019; Page No. 51-52

अध्यात्मिक नाटककार डॉ. शंकर शेष

डॉ. प्रतिभा सिंह [1], ओमप्रकाश गोलिया [2]
[1] शोध निदेशक, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष (हिन्दी विभाग) षा. मोतीलाल विज्ञान महाविद्यालय भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत।
[2] शोधार्थी, बरकतउल्ला विष्वविद्यालय भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

मानव बहुत कुछ जानता है। बहुत कुछ याद भी रखता है, लेकिन फिर भी खुद को भूल जाता है। मानव संसार में बहुत कुछ पाना चाहता है। बहुत कुछ खोजना चाहता है लेकिन स्वयं ही स्वयं को नहीं खोजता, स्वयं को जानने का प्रयास नहीं करता। ये बात सत्य ही है कि जो स्वयं को नहीं जान पाया, स्वयं को नहीं खोज पाया वह दूसरों को कैसे खोजेगा और यह भी सही है कि संसार में मानव का खोजना और प्राप्त करना, आत्मोपलब्धि के बिना अधुरा है।

डॉ. शंकर शेष कृत 'खजुराहो का षिल्पी' नाटक मानव समाज को अध्यात्म की राह दिखाता है।

'खजुराहो का षिल्पी' नाटक की कथानुसार राजा यषोवर्मन की कुलदेवी हेमवती और नाटक का पात्र षिल्पी दोनो 'मोह के क्षण' का षिकार हुए है। इस कारण हेमवती राजा यषोवर्मन से सपने में आकर कहती है कि 'मोह के क्षण' पर विजय प्राप्त करने की कला का निर्माण कर। जिससे व्यक्ति मोह के क्षण पर विजय प्राप्त कर सके। इस प्रकार राजा यषोवर्मन षिल्पी को ऐसे मंदिर का निर्माण करने की बात कहता है जिससे व्यक्ति मोह के क्षण पर विजय प्राप्त कर सकें। इस कार्य के लिए षिल्पी राजा की कन्या अनुपम सुन्दरी अलका को प्रतिदर्ष के रूप में चुनता है। और ऐसे मंदिर का निर्माण करता है जो तीन भागों से मिलकर बना होता है पहले भाग में मिथुन मूर्तियों का चित्रण है जिसका काम मनुष्य को भोग–लिप्सा की ओर खींचने का है। दूसरे भाग में भोग–लिप्सा का चित्रण है लेकिन यह मानव जाति को भोग में बह जाने के लिए नहीं, बल्कि भोग से मोक्ष की राह पर लाने के लिए है। इसी प्रकार मंदिर का तीसरा भाग, भोग से विरक्त होकर आध्यात्म में लीन रहने का संदेष देता है।

नाटककार का कहना है कि जीवन की परिपूर्णता भोग के बाद ही अध्यात्म से प्राप्त की जा सकती है। नाटककार का स्पष्ट मत है कि आध्यात्म तक पहुंचने के लिए पहले भोग का मार्ग चुनना ही पड़ेगा। बगैर भोग के आध्यात्म तक पहुंच पाना कठिन है और व्यक्ति इस सत्य से गुजरे बिना आध्यात्म की यात्रा करता है तो वह जीवन से पलायन हो जाता है। इस सत्य को नाटककार ने षिल्पी के माध्यम से प्रकट किया है–

''महाराज! ये प्रतिमाएं सांसारिक आकर्षण की चरम सीमाएं बनकर मनुष्य के सामने मोह का क्षण प्रस्तुत करेंगी.................. यदि वह इस क्षण से ग्रसित हुआ तो वह पुनः संसार में लौट जायेगा और कहीं उसने इसे जीत लिया तो यही क्षण अध्यात्म के राज पथ पर प्रस्थान बिन्दु बनेगा।''–1

प्रस्तुत पंक्तियों से स्पष्ट होता है कि जो व्यक्ति सांसारिक मोह में लिप्त हो चुका है वह 'मोह के क्षण' में फंस चुका है लेकिन जिसने इस कामना पर विजय पाई है वही व्यक्ति अध्यात्मिक मार्ग पर चला है।

अध्यात्मिक व्यक्ति का व्यक्तित्व व्यापक तथा विस्तृत होता है। उसके विचार सामान्य व्यक्ति से अलग होते हैं वह संकीर्ण एवं सकरे विचार वाला व्यक्ति नहीं होता है वह 'मैं' और 'मेरा' से मुक्त होता है। उसका अनुभव और गहराई ही उसके व्यक्तित्व को परिभाषित करती है इसी में उसका विकास छुपा रहता है यही कारण उसे सामान्य पुरूष से आकाष पुरूष बनाता है।

अध्यात्मिक व्यक्ति होता तो मानव ही है लेकिन वह इस देह को प्राप्त करने के बाद भी देहातीत ही होता है। वह इस संसार में मानव शरीर में अपने उद्देष्यों की पूर्ति में लगा रहता है वह संसार में जीवन यापन करने पर भी अपने उद्देष्यों को नहीं भूलता है उसके विचार विष्वव्यापी होते हैं जिनमें सांसारिक कल्याण की भावना निहित होती है। वह अपने लक्ष्य पर दृढ़ रहता है तथा लक्ष्य की ओर बढ़ाया कदम कभी भी पीछे नहीं खींचता– ''षिल्पीः अलका, मैं विवष हूं।..... मैं फिर से इस संसार में नहीं लौट सकता।''–2

इस प्रकार नाटककार कहता है कि अध्यात्मिक व्यक्ति की दुनिया ही अलग होती है जहां हम अपनी दुनिया में सिमटे और चिपके रहते हैं 'मोह के क्षण' में फंसे रहते हैं तथा 'मोह के क्षण' पर विजय प्राप्त करने तक का ख्याल हमारे मन में नहीं आता है वहीं अध्यात्मिक व्यक्ति, काम, क्रोध, मोह, लोभ को छोड़कर 'मोह के क्षण' पर विजय पाने का प्रयास करता है उसका न तो कोई आग्रह होता है न ही दुराग्रह, वह तो मानव कल्याण के लिए अपना उद्देष्य पूर्ण करता है। उसकी अपनी कोई हॅसी–खुषी, सुख–दुख नहीं होता है वह तो हर व्यक्ति की हॅसी–खुषी में ही आनन्दित रहता है वह तो अपना हृदय तक मानव मानवीयता के लिए समर्पित करने वाला इंसान होता है ऐसे व्यक्ति की समझ और चेतना विराट होती है।

वह एक बार किसी समस्या के मूल में उतर जाये तो जब तक उसका पूर्ण समाधान नहीं ढूढ़ लेता, पीछे नहीं हटता।

अध्यात्मिक व्यक्ति मानव कल्याण के लिए जीता है वह सभी की खुषी में ही अपनी खुषी मानता है वह अपने उद्देष्य पूर्ती के लिए संसार में जरूर रहता है लेकिन 'मोह के क्षण' से मुक्त रहता है इस कारण ही नाटक का पात्र षिल्पी इस संसार में फिर से नहीं लौटना चाहता। क्योंकि वह 'मोह के क्षण' पर विजय पाना चाहता है उसके मन में हमेषा जन कल्याण की भावना रहती है वह त्याग के मार्ग पर चलता है वह कामना में नहीं फंसना चाहता है इसके पीछे उसका उद्देष्य अपने लक्ष्य को प्राप्त करना है। 'मोह के क्षण' पर विजय पाना है।

लेता है वही विष्वविजेता होता है और यह संभव होता है अध्यात्मिकता को पाने से।

नाटककार का मानना है कि जो मनुष्य जीवन में अध्यात्मिकता को प्राप्त कर लेता है उसका व्यक्तित्व श्रेष्ठ गुणों से महकने लगता है यहां तक कि उस मनुष्य की संपूर्ण विकृतियॉ भी धीरे–धीरे नष्ट होने लगती हैं वह व्यक्ति जीवन में कलेष, तनाव, चिंता तथा मोह के क्षण से मुक्त हो जाता है तथा इनके स्थान पर प्रेम, सदाचार, आत्मीयता और आन्तरिक आनंद जैसे गुण प्रकट होने लगते हैं–....... ''आज मेरा मन इस मोह से पूरी तरह

मुक्त है।..... अब मेरे सामने पूर्ण विवस्त्र कामचेष्टाएँ करती हुई रमणी भी उपस्थित हुई तो मुझे विष्वास है कि मुझ पर कोई प्रतिक्रिया नहीं होगी।''–3

इस प्रकार नाटककार कहना चाहता है कि कामना एक हमेषा जलने वाली आग है जो व्यक्ति के मन में अनेक रूपों में चलती रहती है लेकिन इसको नियंत्रित कर लेना विवेक है एवं इसे बुझा देने की हिम्मत करना आत्मविजय है एक बार कामना पर विजय प्राप्त कर ली जाए मतलब मोह के क्षण पर नियंत्रण कर लिया जाए तब ही परम तृप्ति प्राप्त होती है

जीवन का मूल केन्द्र बिन्दु अध्यात्मिकता है इस अध्यात्मिकता को जीवन में आत्मसात करने वाला व्यक्ति सकारात्मक भावनाओं से ओत–प्रोत हो जाता है यहां तक कि निषेधात्मक विचार भी उसके अन्तः मन को छू नहीं सकते। ऐसा ही अध्यात्मिकता से ओत–प्रोत षिल्पी है जो अपनी अध्यात्मिक साधना में लीन है उसके मन में किसी प्रकार के निषेधात्मक विचार नहीं हैं ऐसे व्यक्ति ही उद्देष्यों और लक्ष्यों पर दृढ़ता पूर्वक चलते हैं एवं उन्हें प्राप्त करते हैं।

अध्यात्मिकता जीवन शैली को परिवर्तित कर देती है और व्यक्ति को सकारात्मक दिषा प्रदान करती है व्यक्ति अपने मन में निर्मित प्राचीन गाठों को आसानी से खोल लेता है ऐसा होते ही व्यक्ति का जीवन परिवर्तित हो जाता है उसके व्यवहार में भी परिवर्तन आने लगता है सकारात्मकता ही ऐसे व्यक्तियों का चिंतन होता है अध्यात्म का प्रभाव नैतिकता पर भी होता है ऐसे व्यक्ति आत्म सम्मान व स्वाभीमान की भावना में जीने वाले होते हैं अध्यात्मिकता ही वह कारक है जो व्यक्ति को व्यक्तित्व समायोजन तथा आत्मसिद्धि के मार्ग पर ले जाती है व्यक्ति को हर समस्यों से बचाने का कार्य भी अध्यात्मिकता से होता है यहां तक कि मानव जीवन में श्रेष्ठता व उत्कृष्टता का पथ प्रषस्त अध्यात्म ही करता है। अध्यात्म की गहराई में पहुॅचा व्यक्ति सम तथा विषम परिस्थितियों में भी शांत चित्त रहता है। शारीरिक विचलन भी इन व्यक्तियों को अपने मार्ग से हिला नहीं पाता है।

अध्यात्मिक स्तर में अत्यधिक गहराई पर पहुॅचने वाले व्यक्तियों में 'स्व' विकास होने लगता है जो कि आगे चलकर आत्मज्ञान, आत्मसिद्धि के रूप में सामने आता है ऐसे व्यक्ति समग्रता, समता, मानव प्रेम, समानता, सहानुभूति जैसे गुणों से परिपूर्ण हो जाते हैं जिससे उनका महान व्यक्तित्व उभरकर सामने आता है–

''अलका : तुम्हारा काम तो पूरा हो गया, षिल्पी, पर मैं क्या करूँ? बताओ, मेरा क्या होगा? तुम तो अध्यात्म की ऊॅचाई पर पहुॅच गए, पर मैं........।''–4

इस प्रकार षिल्पी ने मंदिर निर्माण कार्य को पूरा किया, वह भी अलका जैसी अनुपम सुंदरी को प्रतिदर्ष के रूप में उपयोग कर, लेकिन इसके बाद भी उसका मन विचलित नहीं हुआ और वह अध्यात्म को प्राप्त कर सका। षिल्पी ही नाटक का वह पात्र है जो 'मोह के क्षण' में गिरने के बाद उस पर विजय प्राप्त करना चाहता है मंदिर निर्माण में अलका की भूमिका से षिल्पी का मन विचलित न होना, इस बात को प्रमाणित करता है कि षिल्पी भोग से अध्यात्मिकता को प्राप्त कर चुका है।

इस संदर्भ में डॉ. सर्जेराज नारायणराव जाधव 'डॉ. षंकर षेष के नाटक' नामक पुस्तक में लिखते है–'' 'खजुराहों का षिल्पी' ऐतिहासिक कथावस्तु वहन करने वाला एक ऐसा संघर्षषील नाटक है जो कलात्मक अभिव्यक्ति के जरिए हमें ऐसे जीवनादर्ष कि ओर ले जाता है जहां आम आदमी,आदमी नहीं रहता,पर्याप्त आध्यात्मिक योगी बन जाता है। नाटक का अंत जिस आध्यात्म की सीख देता है।''–5

निष्कर्ष

हमारे देष(भारत) के ऋषि–मुनि, ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में विषेष जानकरी रखते थे यही कारण है कि उन्होंने अध्यात्म को जीवन में महत्वपूर्ण स्थान दिया। जिससे मनुष्य सुख , स्वस्थ, और षान्ति को प्राप्त कर सके।

लेकिन मानव की बढ़ती कामना ने ''मोह के क्षण'' के में फॅस कर अध्यात्म को भुला दिया और मानव स्वयं के ज्ञान से ही अज्ञान रहा।

डॉ. षंकर षेष कहना चाहते है कि कामना हमेषा बनी रहेगी उसकी कहीं तृप्ति नहीं है जब तक की हम अध्यात्म की राह पर नहीं पहुॅचते।

सन्दर्भ सूची

1. पृष्ठ 192 हिन्दी के प्रमुख नाटककार
2. पृष्ठ 20–21 अखंड ज्योति (मासिक पत्रिका) अंक 12/ दिसम्बर – 2016
3. पृष्ठ 67 डॉ. शंकर शेष और रत्नाकर मतकरी के नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन
4. पृष्ठ 101–102 शेष के नाटकों में शेष विषेष
5. पृष्ठ 15,35,36 अखंड ज्योति (मासिक पत्रिका)/अंक 9/ दिसम्बर – 2016
6. पृष्ठ 291,300,301 शंकर शेष : समग्र नाटक खण्ड– ८
7. पृष्ठ 9–10 अखंड ज्योति (मासिक पत्रिका)/अंक 4 अप्रैल – 2017
8. पृष्ठ 42, 54 अखंड ज्योति (मासिक पत्रिका)/अंक 2 फरवरी – 2017
9. पृष्ठ 50–51 अखंड ज्योति (मासिक पत्रिका)/अंक 1 जनवरी – 2017